Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on - **"गुर्जर-प्रतिहार वंश। (Note-2)"**

(for TDC Part 2 HISTORY HONOURS)

गुर्जर-प्रतिहार वंश। (Note-2)

नागभट्ट द्वितीय (795 ई०833 ई०)

वत्सराज के पश्चात उसका पुत्र नागभट्ट द्वितीय गुर्जर-प्रतिहारों का राजा हुआ। वह अपने वंश की खोई हुई प्रतिष्ठा पुनः स्थापित करने में जुटा रहा। ग्वालियर लेख में उसकी उपलब्धियों का वर्णन मिलता है। उसके अनुसार उसने आंध्र, सिंध, विदर्भ, मत्स्य और तुरुष्कों से संघर्ष किया । उसने कन्नौज पर आक्रमण करके आयुधवंशी शासक चक्रायुध को गद्दी से उतार दिया जो धर्मपाल द्वारा नियुक्त था और इस प्रकार अपनी सत्ता स्थापित की। उसने धर्मपाल को पराजित किया पर कन्नौज पर उसका स्थायी प्रभुत्व स्थापित नहीं हो पाया किंतु वाह उतरी भारत का शक्तिशाली शासक बन बैठ। धर्मपाल और चक्रायुध ने तत्कालीन राष्ट्रकूट नरेश गोविंद तृतीय को कन्नौज पर आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया । गोविन्द तृतीय ने नागभट्ट को पराजित कर दिया और मालवा तथा गुजरात पर अधिकार कर लिया।

नागभट्ट द्वितीय के बाद प्रतापी शासक मिहिरभोज (836

ई०-839 ई०) था । उसने अपने पिता रामभद्र (833 ई०-836 ई०) की हत्या करके राजगद्दी प्राप्त की थी। वह इस वंश का सर्वाधिक महत्वपूर्ण ,साहसी और महत्त्वाकांक्षी शासक था । उसके शासनकाल की घटनाओं की सूचना अनेक लेखों से प्राप्त होती है जिसमें से कुछ स्वयं उसी के तथा कुछ उसके उत्तराधिकारीयो के हैं। उसका सबसे महत्वपूर्ण लेख ग्वालियर से मिलता है जो प्रशस्ति के रूप में है।लेखो के अतिरिक्त कल्हन तथा अरबी यात्री सुलेमान के विवरणों से भी हम उसके काल की घटनाओं का जानकारी प्राप्त करते हैं ।राज्यारोहण के शीघ्र बाद उसने बुंदेलखंड में अपनी सत्ता स्थापित की । उसने मारवाड़ में भी गुर्जरवंश की प्रभुसत्ता पुनः स्थापित की। बंगाल में देवपाल पर उसने आक्रमण किया किंतु यहाँ वह जीत नहीं सका लेकिन दक्षिण में उसने राजपुताना और नर्मदा तक अपनी सत्ता स्थापित कर ली थी । देवपाल की मृत्यु के बाद पूरब में उसने कुछ समय के लिए अपनी स्थिति मजबूत कर ली । उसने बंगाल के नारायण पाल को पराजित किया तथा उसके राज्य के पश्चिमी भाग को अपने अधिकार में कर लिया। मिहिर भोज ने नर्मदा नदी के तट पर राष्ट्रकूट राजा कृष्ण द्वितीय को पराजित किया

। उसने गुजरात के काठियावाड़ प्रदेश को भी जीता । कृष्ण द्वितीय से दूसरी बार के युद्ध में मिहिरभोज पराजित हुआ और संभवत मालवा को उसने खो दिया ।मिहिर भोज वैष्णव धर्म का संरक्षक था । अभिलेखों में उसे, आदिवाराह उपाधि से विभूषित किया गया है।

महेन्द्रपाल प्रथम (890 ई०-910 ई०)

मिहिर भोज प्रथम के बाद उसका पुत्र महेंद्र पाल प्रथम शासक बना उसने ना केवल अपने पिता सेउत्तराधिकार में प्राप्त साम्राज्य को अक्षुण्ण बनाए रखा अपितु पूर्व में उसका विस्तार भी किया । दक्षिण बिहार तथा बंगाल से प्राप्त लिखो से स्पष्ट है कि महेंद्र पाल ने अपने समकालीन पाल शासक को पराजित कर उत्तरी बंगाल को जीत लिया था ।काठियावाड़ पूर्वी पंजाब झांसी तथा अवध से भी उसके लेख मिलते हैं जो उसके साम्राज्य विस्तार की सूचना देते हैं।उसने दक्षिण-पश्चिम में सौराष्ट्र तक अपनी सत्ता स्थापित कर ली थी। राजतरंगिणी से ज्ञात होता है कि कश्मीर के राजा ने उसके राज्य के कुछ भाग छीन लिए थे। उसका साम्राज्य हिमालय से विन्ध्याचल तक और पूर्वी समुद्र से पश्चिमी समुद्र तक विस्तारित था । इस

प्रकार महेंद्रपाल ने एक अत्यंत विस्तृत साम्राज्य पर शासन किया । उसने जीवन पर्यंत अपने शत्रुओं को दबा कर रखा।

महेंद्रपाल ना केवल एक विजेता एवं साम्राज्य निर्माता था अपितु कुशल प्रशासक एवं विद्या और साहित्य का महान संरक्षक भी था। उसकी राज्यसभा में प्रसिद्ध विद्वान कवि राजशेखर निवास करते थे जो उनके गुरु थे। कवि-लेखक-साहित्यकारों का वह उदार संरक्षक था । महेंद्र पाल के शासनकाल में राजनीतिक तथा सांस्कृतिक दोनों ही दृष्टियों से प्रतिहार साम्राज्य की अभूतपूर्व प्रगति हुई । कन्नौज ने एक बार पुनः वही गौरव एवं प्रतिष्ठा प्राप्त कर लिया जो हर्षवर्धन के काल में उसे प्राप्त था।

References: Internet & Competitive books.